उपनिषद् वाङ्मय

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान्)
भाषामीमांसा एवं शास्त्र शोधपीठ,
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

वैदिक वाङ्मय में चारों वेदों की संहिताएँ, उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थ, ऋषियों के तत्त्वचिन्तन को अभिलिखित करने वाले आरण्यक ग्रन्थ और दर्शन का आधार देने वाली उपनिषदें प्रमुखतया आते हैं । जहाँ वेद और वेदान्त में विभेद करने हेतु वाङ्मय का वर्गीकरण किया जाता है, वहाँ अवश्य ही वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र आदि वेद के साथ और उपनिषदें वेदान्त में वर्गीकृत की जाती हैँ । ईशावास्य उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद की संहिता का अन्तिम अध्याय है अतः कुछ विद्वान् इसका अर्थ वेदान्त अर्थात् वेद का अन्तिम भाग करते हुए दर्शन साहित्य को वेदान्त के वर्ग में लेते हैं। उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता यह हमारे दर्शनों की आधारभूत ग्रन्थत्रयी है, जिसे प्रस्थानत्रयी कहा जाता है।

साधारणतया ऐसा माना जाता है कि उपनिषद् आरण्यकों के परिशिष्ट के रूप में है और आरण्यक ब्राह्मणों के उपग्रन्थ हैं। लेकिन यह कहना कठिन है, कि ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों को सदैव मूलतः भिन्न शास्त्रों के रूप में ही माना गया। कई स्थानों में जिस विषय के सम्बन्ध में हम यह आशा करते हैं, कि वह ब्राह्मणों में वर्णित होना चाहिए, आरण्यकों में उपलब्ध होता है और आरण्यकों की सामग्री को उपनिषदों की शिक्षाओं में समाविष्ट कर दिया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि ये तीनों साहित्य एक ही विकास श्रृंखला की कड़ियाँ है और एक ही साहित्य के रूप में इनको स्वीकार किया गया है। यद्यपि उनके वर्ण्य विषय भिन्न हैं। ड्यूसन के अनुसार - 'इनके विभाजन का सिद्धांत इस प्रकार है। ब्राह्मण ग्रन्थ गृहस्थियों के लिए ही लिखे गए। आरण्यक वानप्रस्थ के लिए वृद्धावस्था में गार्हस्थ्य जीवन के उपरान्त प्रयोग हेतु बना और उपनिषद् विश्वबंधन का परित्याग करने वाले मुमुक्षु संन्यासियों के निर्दिष्ट किए गए हैं। साहित्यिक वर्गीकरण की बात को छोड़ दिया जाए तो यह कहा जा सकता है, कि उपनिषदों को प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने वैदिक साहित्य से भिन्न प्रकार के साहित्य के रूप में स्वीकार किया, जिसमें ज्ञान मार्ग की चर्चा है।

उपनिषदों की संख्या 112 बतायी जाती है। जिन उपनिषदों को निर्णय सागर प्रेस ने 1917 में प्रकाशित किया है, वे उपनिषद् इस प्रकार है - (1)ईश। (2) केन (3) कठ (4) प्रश्न (5) मुंडक (6) मांडूक्य (7) तैत्तिरीय (8) एतरेय (9) छान्दोग्य (10) बृहदारण्यक (11) श्वेताश्वतर (12) कौषीतकि (13) मैत्रेयी (14) कैवल्य (15) जाबाल (16) ब्रह्मबिन्दु (17) हंस (18) आरुणि (19) गर्भ (20) नारायण (21) नारायण (22) परमहंस (23) ब्रह्म (24) अमृतनाद (25) अथर्वशिरस (26) अथर्वशिखा (27) मैत्रायणी (28) बृहज्जाबाल (29) नृसिंह पूर्वतापिनी (30) नृसिंहोत्तरतापिनी (31) कालाग्निरुद्र (32) सुबाल (33) क्षुरिका (34) यन्त्रिका (35) सर्वसार (36) निरालम्ब (37) शुकरहस्य (38) वज्रसुचिका (39) तेजोबिन्दु (40) नादबिन्दु (41) ध्यानबिन्दु (42) ब्रह्मविद्या (43) योगतत्त्व (44) आत्म बोध (45) नारदपरिव्राजक (46) त्रिशिखि ब्राह्मण (47) सीता (48) योगकुमुदिनी (49) निर्वाण (50) मंडलब्राह्मण (51) दक्षिणामूर्ति (52) शरभ (53) स्कन्द (54) त्रिपाद् विभूति महानारायण (55) अद्वयतारक (56) रामरहस्य (57) रामपूर्वतापिनी (58) रामोत्तरतापिनी (59) वासुदेव (60) मुद्गल (61) शांडिल्य (62) पिंगल (63) भिक्षुक (64) महा (65) शारीरक (66) योगशिखा (67) तुरीयातीत (68) संन्यास (69) परमहंस परिव्राजक (70) अक्षमाला (71) अव्यक्त (72) एकाक्षर (73) अन्नपूर्णा (74) सूर्य (75) अक्षि (76) अध्यात्म (77) कुंडिक (78) सावित्री (79) आत्मा (80) पाशुपत ब्रह्म (81) परब्रह्म (82) अवधूत (83) त्रिपुरतापिनी (84) (85) त्रिपुरा (86) कठरुद्र (87) भावना (88) रुद्रहृदय (89) योगकुंडली (90) भस्मजाबाल (91) रुद्राक्षजाबाल (92) गणपति (93) जाबालदर्शन (94) तारसार (95) महावाक्य (96) पञ्चब्रह्म (97)प्राणाग्निहोत्र (98) गोपालपूर्वतापिनी (99) गोपालोत्तरतापिनी (100) कृष्ण (101) याज्ञवल्क्य (102) वाराह (103) लाट्यायनीय (104) हयग्रीव (105) दत्तात्रेय (106) गरुड़ (107) कलिसंतरण (108) जाबालि (109) सौभाग्यलक्ष्मी (110) सरस्वती रहस्य (111) बह्वृच (112) मुक्तिक।

औरंगजेब के भाई दाराशिकोह द्वारा अनूदित उपनिषदों के संग्रह में 50 उपनिषद् हैं। मुक्तिक उपनिषद् में 108 उपनिषदों की सूची दी हुई है। प्रथम 13 उपनिषदों को छोड़ कर बाकी सभी उपनिषद उत्तरकालीन हैं। इस अध्याय में जिन उपनिषदों का वर्णन है, वे सब प्रारम्भिक उपनिषद् हैं। उत्तरकालीन उपनिषदों में कुछ ऐसी हैं, जो इन प्रारंभिक उपनिषदों की विषयवस्तु को ही दुहराती या उद्धृत करती हैं और कुछ ऐसी हैं, जो शैव तंत्र योग और वैष्णव सिद्धान्तों का निरूपण करती हैं। उत्तरकालीन उपनिषदों में से कुछ ऐसी भी हैं, जो 14 वीं अथवा 15वीं शताब्दी में लिखी गयी हैं।